पाठ 18. पढ़ाई

पाठ का परिचय

रामू का मन पढ़ने में नहीं लगता था। न वह कक्षा में ध्यान देता था न ही वह गृहकार्य करता था। स्कूल से आने के बाद खाना खाकर टेलीविज़न देखता या फिर कंप्यूटर खोलकर बैठ जाता। शाम को खेलने निकल जाता। ऐसा करते-करते दिसंबर का महीना आ गया। दूसरे सत्र की परीक्षा आ गई। रामू ने घर आकर माँ को बताया। माँ भी चिंता में पड़ गई। परीक्षा परिणाम भी आया। रामू सभी विषयों में फेल था। घर पहुँचने पर माँ उसका लटका हुआ मुँह देखकर समझ गई कि वह फेल हो गया है। माँ को दुखी देख रामू और भी विचलित हो गया। उसी समय मूँगफली वाले की आवाज़ आई। रामू को आश्चर्य हुआ कि वह इतनी रात और इतनी ठंड में मूँगफली क्यों बेच रहा है। जब रामू को यह पता चला कि उसके दो बेटे हैं और वे दोनों अपनी-अपनी कक्षा में प्रथम आते हैं, उन्हीं के लिए वह मूँगफली बेचकर पैसे कमा रहा है तो रामू को अपनी गलती पर ग्लानि हुई। उसने निश्चय किया कि वह भी अब मन लगाकर पढ़ाई करेगा।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

माता-पिता अपने बच्चों के लिए हर सुख-सुविधाएँ जुटाते हैं और चाहते हैं कि बच्चे अच्छी पढ़ाई कर उनका नाम रोशन करें। लेकिन बच्चे मौज-मस्ती में पड़कर सब कुछ भूल जाते हैं। उन्हें अपने माता-पिता की इच्छाओं का ध्यान रखते हुए मन लगाकर पढ़ाई करनी चाहिए। बच्चों को उन बच्चों की ओर भी देखना चाहिए जिन्हें कोई सुख-सुविधा नहीं मिलती फिर भी दिन-रात मेहनत करके वे अव्वल आते हैं और अपने माँ-बाप को खुशियाँ देते हैं।

पाठ का वाचन

पहले स्वयं पाठ का आदर्श वाचन करें। उसके बाद बच्चों से एक-एक अनुच्छेद पढ़वाएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

दिए गए प्रश्नों पर आधारित चर्चा करें –

- पढ़ना जीवन के लिए क्यों आवश्यक है?
- किस-किस को पढ़ना बहुत अच्छा लगता है?
- माता-पिता की इच्छा पूरी करने के लिए तुम क्या-क्या करने को तैयार हो?
- यदि किसी गरीब लड़के को पढ़ाई के लिए तुम्हारी सहायता चाहिए तो तुम किस प्रकार की सहायता कर सकते हो?